Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

# मुगल सम्राट अकबर की वेशभूषा : एक अध्ययन

विनय कुमार पटेल*

अकबर के शासनकाल में विदेशी परिधानों का भारतीय परिधानों के साथ समन्वीकरण हुआ। इससे पूर्व विदेशी परिधानों की बनावट, शैली अच्छी नहीं थी किन्तु अकबर की उदारता और उसके व्यापक दृष्टिकोण के कारणों से परिधानों की बनावट में ही परिवर्तन नहीं हुआ वरन् उसमें अनेक नवीन परिधानों का प्रचलन भी हुआ। अकबर के समय वेशभूषा में अनेक परिवर्तन होने लगे। धीरे–धीरे तुर्की, ईरानी परिधानों का प्रचलन कम हो गया। हिन्दू पहनावा, शैली व परिधानों की बनावट का प्रभाव विदेशी परिधानों पर पड़ने के कारण उनके आकार व डिजाइनों में परिवर्तन होने लगे। धीरे–धीरे दरबार में राजपूती वस्त्रों का प्रचलन बढ़ने लगा।

*आइन–ए–अकबरी* में अबुल फजल ने लिखा है कि, अकबर ने अपना ध्यान ईरानी, यूरोपीय, मंगोलियन परिधानों पर विशेष रूप से दिया। कुशल कारीगरों को देश में बसाया गया ताकि वे वस्त्र उत्पादन की तकनीक में सुधार ला सकें। अहमदाबाद, लाहौर, आगरा, फतेहपुर आदि शहरों के शाही कारखानों में अनेक किस्म के कपड़े तैयार होने लगे। कपड़ों पर छपाई, रंगाई की कला में प्रवीणता आई।

अबुल फजल लिखता है कि, अकबर ने अनेक वस्त्रों को नाम दिए हैं जैसे– जामा (कोट) को 'इजारख', निमताह (जैकेट) को 'तन्जेब', फोता को 'पत्यत', बुर्का को 'चित्रगुप्त', पटका को 'कटजेब', शाल को 'फरमनरम', कपूरघूर को 'कपूरनूर', पथ अफजार (जूता) को 'चरन धारन' कहा है।[1]

*आइन–ए–अकबरी* में अबुल फजल ने विभिन्न प्रकार के शालों का उल्लेख किया है, जैसे कि–[2]

(1) **तूस शाल**–तूस शाल जानवरों के बालों से बनाया जाता था। यह शाल काले, सफेद एवं लाल रंग की होती थे। ये हल्की मुलायम एवं काफी गर्म होते थे। बाद में अकबर ने इनको विभिन्न प्रकार के रंगों से रंगवाना प्रारम्भ कर दिया।

(2) **सफेद अलचा (तहदार)**–यह शाल प्राकृतिक तत्वों से तैयार किया जाता था। यह शाल काली एवं सफेद होती थी। कभी–कभी इसमें दोनों रंगों को मिश्रित कर एक नया रंग प्रदान किया जाता था, जिसके द्वारा शालें रंगीन बननी शुरू हो गयीं।

कलाब–तून, मशीदा, कलगई, बन्धून, छीट, जरदोजी, अलचा शालों की ओर अकबर ने विशेष ध्यान दिया है। लाहौर एवं कश्मीर में शाल तैयार करने के हजारों कारखाने मिलते थे। 'ममान' नामक शाल जो कि रेशम व ऊन को मिलाकर बनाए जाते थे, उसका प्रयोग 'चीरा' (पगड़ी) तैयार करने में होता था।[3]

शाही जमादार खाने में जो परिधान एकत्र किए जाते थे, उनके रंग, मूल्य तथा वजन को ध्यान में रखकर दिन, वर्ष, महीने तथा पट्टी टांक कर प्रत्येक परिधान पर उनके पहनने का समय उल्लिखित कर दिया करते थे। वर्ष के प्रारम्भ में जो भी वस्त्र प्राप्त होते थे, उन्हें अन्य समय में आने वाले परिधानों की तुलना में उत्तम श्रेणी में रखा जाता था। रंगों के हिसाब से उन्हें निम्नलिखित ढंग से श्रेणीबद्ध किया जाता था। तूस, सफेद, अलचा, लाल रंग, सुनहरे रंग, नारंगी रंग, चंदन के रंग, बादामी रंग, अंगूरी उत्तावी, तोते के रंग, शब्द के रंग, भूरी रतन मंजरी के फूल के रंग, गुलाबी, हल्का नीला, पीले रंग, चमकीले गुलाबी, आम के रंग, कस्तूरी के रंग, फाख्ता के रंग आदि।[4]

फादर मांसरेट लिखता है कि, अकबर को यूरोपीय वस्त्र पहनने का शौक था। उसने अपने दरबार में यूरोपीय वस्त्रों का प्रचलन प्रारम्भ किया। विशेष अवसरों पर वह स्वयं यूरोपीय वस्त्र पहना करता था। वह रेशमी जरी के कढ़े हुए कपड़े भी

*शोधछात्र, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

पहना करता था। उसके सैनिकों के लबादे उनके घुटनों तक आते थे। इन परिधानों की डिजाइन उसने खुद तैयार करवायी थी। अकबर पुर्तगाली फैशन के अनुसार काले मखमल के परिधान कभी–कभी व्यक्तिगत जीवन में पहनता था।[5] विदेशी परिधानों में अकबर को 'फरमूल' बहुत पसन्द था। यह एक प्रकार का लबादा था जिसे कि बरसात के मौसम में पहना जाता था।

अपने पिता हुमायूँ की भाँति वह प्रत्येक दिन, उस दिन के नक्षत्र व नक्षत्र के रंग के अनुसार परिधान धारण करता था। उसके सभी परिधान शाही वस्त्रों की अलमारी में एकत्र होते रहते थे। वहाँ उन्हें प्रतिदिन, माह, वर्ष के अनुसार तरतीबार सजाया जाता था और उनके मूल्य तथा वजन की लिखा–पढ़ी भी की जाती थी।

अकबर अपने काल में बने हुए जामा की तरह का बना हुआ कोट 'फुर्जी' भी पहनता था। फुर्जी आगे की ओर न खुला होकर किनारे की ओर खुला रहता था। यह जाड़े में पहना जाता था। इसका कालर मुड़ा रहता था। इसमें एक सेर के बराबर रूई भरी रहती थी और उसे कमर पर करजेब से बाँधा जाता था। वास्तव में यह एक लम्बा कोट होता था जो कि वक्ष पर कसा व घेरेदार कमर तक खुला हुआ, उस पर बटन लगा हुआ होता था। यह गले से लेकर कमर तक बन्द लगा हुआ परिधान होता था।[6]

**'आइने–ए–अकबरी' में वर्णित सम्राट अकबर के परिधानों की सूची–**

अबुल फजल ने *आइने–ए–अकबरी* में मुगल सम्राट अकबर के परिधानों की सूची दी है जो निम्न है–

1. ***तकौचिया***–यह भारतीय कोट के समान बिना अस्तर का होता था। अकबर से पूर्व इस कोट के घेरे में चुन्नटें होती थीं और उसे बांयी ओर से बाँधा जाता था किन्तु अकबर ने इस कोट को गोलदार बनाने का आदेश दिया और कहा कि इसे दाहिनी ओर बाँधने की व्यवस्था की जाए। इस कोट में सात गज व सात गिरह कपड़ा लगता था और उसके बंद को बनाने में पाँच गिरह कपड़ा लगता था।[7]

2. ***पेशवाज***–यह वास्तव में स्त्रियों द्वारा पहना जाने वाला लम्बा लबादा हुआ करता था। उसमें चोली व घेरे का मेल रहता था। अबुल फजल के अनुसार वह जामा की तरह होता था किन्तु आगे से खुला रहता था। इस काल के चित्रों में शाही परिवार की स्त्रियों, नर्तकियों को पेशवाज पहने हुए दिखाया गया है। इसमें बन्द नहीं लगाये जाते थे। आमतौर पर पेशवाज को गर्मियों में ही स्त्रियाँ पहना करती थीं। उसे मलमल, रेशम या बायल के कपड़े से ही बनाया जाता था। जाड़े में स्त्रियाँ उस पर कबा पहन लिया करती थीं। पेशवाज आगे से खुला हुआ कोट होता था।

3. ***दोतही***–अस्तरदार कोट जिसमें छः गज तथा चार गिरह कपड़ा बाहरी खोल के लिए, छः गज अस्तर, चार गिरह कपड़ा बन्द, नौ गिरह कपड़ा किनारा बनाने के लिए लगाया जाता था। उसमें एक मिशकल रेशम का वस्त्र भी लगता था व उसका मूल्य एक रुपए से तीन रुपए तक था।[8]

4. ***शाह अजीदा***–(शाही ढंग से सिला हुआ कोट) इसे *'शाशखत्त'* भी कहते हैं क्योंकि उसमें प्रति गिरह में 60 अलंकारिक टाँके लगाए जाते थे। इसमें दोहरा अस्तर भी लगाया जाता था। इसका दाम दो रुपए प्रति गज था।[9]

5. ***सोजनी***– इसको बनाने में एक सेर रूई और दो दाम का रेशमी वस्त्र लगता था। यदि उसकी बखिया लगाकर सिलाई होती थी तो उसका मूल्य आठ रुपया होता था, किन्तु आसिदा ढंग से सिलाई करने पर उसका मूल्य चार रुपया होता था।[10]

6. ***कलगी***–कलगी बनाने में कुछ रूई व एक दाम का रेशम लगता था और उसका मूल्य दो रुपया होता था।

7. ***कबा***–इसे *'जामा–ए–पम्वार्दर'* कहते थे। इसे सूत के कपड़े या रेशम से बनाते थे। उसका मूल्य एक रुपए से पोने एक तक होता था।[11]वास्तव में कबा जाड़े में पहना जाने वाला रूई से भरा हुआ परिधान होता था। आमतौर पर इसे मुख्य परिधान पर ही पहनते थे। कबा को मुख्यतः विद्वान ही पहना करते थे। यह आधी या पूरी बाँहदार होती थी। इसकी फिटिंग ढीली होती थी। इसकी लम्बाई अधिक होती थी, इसमें बटन नहीं लगाए जाते थे परन्तु आगे की ओर उसे बन्द से बाँधा जाता था। इसको स्त्रियाँ भी पहनती थीं।

8. ***गदर***–कबा से बड़ा व चौड़ा गदर होता था। इसका मूल्य आठ आने से लेकर डेढ़ रुपए तक होता था।[12] गदर को जाड़े में पहना जाता था। 'ब्लोकमैन' ने इसको *'भारतीय ओवरकोट'* कहा है।

9. ***फुर्जी***–इसमें कोई बन्द नहीं लगता था। कभी–कभी उसे आगे से बन्द करने के लिए एक ओर बटन लगा दिया जाता था। इसका मूल्य पौने एक रुपया से लेकर एक रुपए तक होता था।[13]

10. ***फरगूल***–यह बहुत ही सुविधाजनक कोट था। उसे यूरोप से मंगाया जाता था। उसे इकहरा या दोहरा दोनों तरफ से बनाया जाता था और इसका मूल्य आधे रुपए से लेकर दो रुपए तक का होता था।[14]

11. ***चकमन***–चकमन को मोटे कपड़े या ऊनी कपड़े या मोमिया वस्त्र से बनाया जाता था। अकबर ने अपने लिए मोमिया कपड़े से यह परिधान बनवाया था जो कि बहुत हल्का व सुन्दर था। वर्षा ऋतु में इसे पहनने पर इस पर पानी का कोई असर नहीं होता था। मोटे कपड़े से बना हुआ चकमन का मूल्य दो रुपए ऊनी कपड़े से बने हुए चकमन का मूल्य डेढ़ रुपया तथा मोमिया वस्त्र से बने हुए चकमन का मूल्य आधा रुपया होता था।[15]

12. ***शलवार***–यह अनेक कपड़ों से तैयार किए जाते थे। इनका मूल्य चार आने से आठ आने तक होता था।[16] अबुल फजल के अनुसार अकबर ऊनी परिधान विशेषकर शाल धारण करता था। उसके परिधान की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी भी पुरुष के द्वारा पहना जा सकता था।[17] शलवार घुटनों तक ढीला होता था और उसके बाद तंग होता जाता था। उसे कमर में कमर बन्ध से बाँधते थे। इसे स्त्रियाँ भी पहना करती थीं।

ये पोशाकें भी अनेक प्रकार की होती थीं। खासे (राजकीय वस्त्रालय) के लिए प्रत्येक ऋतु में सब प्रकार के एक सहस्र पहनावे पूर्णतया तैयार कराये जाते थे और एक सौ बीस वस्त्र बारह पुलिंदों में सदा तत्पर रखे जाते थे। सांसारिक वस्तुओं से विरक्ति रखने के कारण सम्राट ऊनी वस्त्रों से बहुत प्रेम करता और पहनना भी था, विशेषतः शाल। सम्राट की यह विचित्रता थी कि उसके वस्त्र नाटे और लम्बे अर्थात् हर प्रकार के डील वाले मनुष्य के शरीर पर ठीक से आ जाते थे, इसको देखकर छोटे–बड़े आश्चर्य करते थे।

**सन्दर्भ** –

1. अबुल फजलः*आइन–ए–अकबरी* : भाग–1, अनु0 ब्लाकमैन, नयी दिल्ली, 2008, पृ0 97–98
2. अबुल फजल : *आइन–ए–अकबरी* : अनु0 ब्लाकमैन, नयी दिल्ली, 2008, पृ0 96–97
3. उपर्युक्तःपृ0 98
4. उपर्युक्तःपृ0 97–98
5. मांसरेट, फॉदरः*दि कमेंटरी ऑफ फॉदर मोनसरेट,* अंसारी : दि यूरोपीय ट्रेवल्स अण्डर दी मुगल्स, नयी दिल्ली, 1988, पृ0 5

6. वर्मा, एस0पी0: *मध्यकालीन भारत में समाज एवं संस्कृति,* नयी दिल्ली, 1987, पृ0 48
7. अल्लामी, अबुल फजल: *आईना–ए–अकबरी,* अनु0 ब्लाकमैन, भाग 1, नयी दिल्ली, 2008, पृ0 94
8. उपर्युक्तः पृ0 95
9. उपर्युक्तः पृ0 95
10. उपर्युक्तः पृ0 95
11. उपर्युक्तः पृ0 95
12. उपर्युक्तः पृ0 95
13. उपर्युक्तः पृ0 95
14. उपर्युक्तः पृ0 95
15. उपर्युक्तः पृ0 96
16. उपर्युक्तः पृ0 96
17. उपर्युक्तः पृ0 96